गोधूलि

(भाग - 1)

नवीं कक्षा की हिंदी पाठ्यपुस्तक

ARDIEL SOLUTIONS
ABSOL
PATNA

सत्यमेव जयते

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित)

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड

निदेशक (माध्यमिक शिक्षा), शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

प्रथम संस्करण : 2009
पुनर्मुद्रण : 2011
संशोधित संस्करण : 2012
पुनर्मुद्रण : 2013
पुनर्मुद्रण : 2014
पुनर्मुद्रण : 2015
मूल्य : रु० 26.00

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना - 800 001 द्वारा प्रकाशित तथा सुपर ऑफसेट प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, नया टोला, पटना - 4 द्वारा 1 00,000 प्रतियाँ मुद्रित।

प्राक्कथन

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार अप्रैल, 2009 से कक्षा - IX हेतु नए पाठ्यक्रम को लागू किया गया है। प्रथम चरण में शैक्षिक सत्र 2009 के लिए वर्ग IX की सभी भाषायी एवं गैर भाषायी पुस्तकों का पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया। इस नए पाठ्यक्रम के आलोक में एस.सी.ई.आर.टी., बिहार, पटना द्वारा सभी भाषायी एवं गैर भाषायी पुस्तकें (वाणिज्य एवं कला विषयक) बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम द्वारा आवरण चित्रण कर मुद्रित किया गया है।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए माननीय मुख्यमंत्री,श्री जीतन राम मांझी,शिक्षा मंत्री,श्री वृशिण पटेल तथा शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव, श्रीआर० के० महाजन के मार्ग निर्देशन के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

एस.सी.ई.आर.टी, बिहार, पटना के निदेशक के हम आभारी हैं, जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया।

बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके।

- दिलीप कुमार, आई.टी.एस.
प्रबंध निदेशक,
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि०

दिशा-बोध

श्री हसन वारिस, निदेशक, राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार ।
श्री रघुवंश कुमार, निदेशक (शैक्षणिक), बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक प्रभाग), पटना ।
डॉ० सैय्यद अब्दुल मुईन, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार ।
डॉ० कासिम खुर्शीद, अध्यक्ष, भाषा शिक्षा, शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार ।

पाठ्यपुस्तक विकास समिति

अध्यक्ष, हिंदी भाषा समूह

प्रो० भृगुनंदन त्रिपाठी, हिंदी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।

समन्वयक, हिंदी भाषा समूह

डॉ० हेमंत कुमार हिमांशु, सहायक संपादक, ज्ञान विज्ञान पटना ।

सदस्य, हिंदी भाषा समूह

श्री ब्रजेश पाण्डेय, व्याख्याता, हिंदी विभाग, एल० पी० शाही कॉलेज (मगध विश्वविद्यालय), पटना ।
डॉ० संजय कुमार सिंह, हिंदी विभाग, ए० एन० कॉलेज (मगध विश्वविद्यालय), पटना ।
डॉ० सत्येन्द्र पाठक 'प्रियेश', शिक्षक, एकलव्य एजुकेशनल कॉम्प्लेक्स, पटेल नगर, पटना ।
श्री कुमार पुष्पेंदु, शिक्षक, आर्य कन्या उच्च विद्यालय, पटना ।

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक) की समीक्षा समिति के सदस्य

प्रो० रामबुझावन सिंह, निदेशक, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना ।
डॉ० शंकर प्रसाद, अ० प्रा० प्राध्यापक, हिंदी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।

अकादमिक सहयोग

डॉ० अर्चना, व्याख्याता, एस० सी० ई० आर० टी०, पटना ।

अकादमिक संयोजक, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विकास समिति

डॉ० ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, प्राचार्य, तपेन्दु इंस्टीच्यूट ऑफ हायर स्टीज, पटना

आमुख

यह पुस्तक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2006 के आलोक में विकसित नवीन पाठ्यक्रम (2007) के आधार पर तैयार की गई है। इस पुस्तक के विकास में इस बात का ध्यान रखा गया है कि "शिक्षा का मतलब बिहार के स्कूली शिक्षार्थियों को इतना सक्षम बना देना है कि वे अपने जीवन का सही-सही अर्थ समझ सकें, अपनी समस्त योग्यताओं का समुचित विकास कर सकें, अपने जीवन का मकसद तय कर सकें और उसे प्राप्त करने हेतु यथासंभव सार्थक एवं प्रभावी प्रयास कर सकें, और साथ ही साथ इस बात को भी समझ सकें कि समाज के दूसरे व्यक्ति को भी ऐसा ही करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है।" राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2006 हमें बताती हैं कि शिक्षार्थी के स्कूली जीवन और स्कूल से बाहर के जीवन में अंतराल नहीं होना चाहिए। किताब और किताब से बाहर की दुनिया आपस में गुँथी होनी चाहिए। आशा है कि यह कदम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित शिक्षार्थी केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफी दूर तक ले जाएगा।

इस पुस्तक में किशोरियों-किशोरों की कल्पनाशक्ति के विकास, उनकी गतिविधियों की सृजनशीलता, उनके सवाल करने और उनका उत्तर पाने के मौलिक अधिकार के समुचित संरक्षण और उसे रचनात्मक दिशा देने की कोशिश की गई है। निश्चय ही इसमें शिक्षार्थियों के साथ-साथ शिक्षकों की भी गहरे लगाव के साथ उतनी ही भूमिका होनी चाहिए। शिक्षार्थियों के प्रति संवेदना और सहानुभूति के साथ उन्हें पुस्तक में गहरी सक्रिय सहभागिता बरतनी होगी और लेखक परिचय, मूल पाठ और उसके साथ संलग्न अभ्यास प्रश्नों के संदर्भ में समुचित जागरूकता दिखानी होगी। हर पाठ के साथ अनेक तरह के अभ्यास हैं जिनसे शिक्षार्थियों की पाठ पर पकड़ तो बनेगी ही, साथ ही उनके भीतर व्यापक जिज्ञासा को प्रोत्साहन मिलेगा। पुस्तक की परिकल्पना में अनेक महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखा गया है। भाषा और साहित्य के ढर्रे में बँधे घेरों को सकारात्मक स्तर पर तोड़ने और वृहत्तर अनुभव क्षेत्रों को उनसे जोड़ने के साथ-साथ वैविध्यपूर्ण पाठ शृंखला को उबाऊ होने से बचाते हुए ऐसा प्रयत्न किया गया है कि पाठ बोझिल न हों तथा सामयिक जीवन संदर्भों से जुड़ कर छात्र के लिए रोचक बन जाएँ। छात्र उत्सुकता और आनंद के साथ तनावमुक्त रीति से उन्हें पढ़ते हुए बहुविध जानकारी प्राप्त करें और उस जानकारी का ज्ञान के सृजन में उपयोग कर सकें।

एस० सी० ई० आर० टी० सर्वप्रथम मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार के प्रधान सचिव श्री अंजनी कुमार सिंह, इस पुस्तक में शामिल रचनाकारों, उनके प्रकाशकों एवं परिवारजनों के प्रति विशेष आभार प्रकट करती है, और साथ ही इस पुस्तक के विकास के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक विकास समिति के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करती है। हिंदी भाषा समूह के अध्यक्ष प्रो० भृगुनंदन त्रिपाठी, समन्वयक डॉ० हेमंत कुमार हिमांशु, सदस्य श्री ब्रजेश पाण्डेय, डॉ० संजय कुमार सिंह, डॉ० सत्येन्द्र कुमार पाठक 'प्रियेश' और श्री कुमार पुष्पेंदु के प्रति हम विशेष आभार प्रकट करते हैं। इन्होंने गहरी सूझबूझ, अथक परिश्रम और भावात्मक लगाव के साथ इस कार्य को तत्परतापूर्वक संपन्न किया। पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विकास समिति के अकादमिक संयोजक श्री ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी के प्रति भी हम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। श्री त्रिपाठी की एकनिष्ठ सक्रियता का ही परिणाम है कि यह पुस्तक आपके हाथों में पहुँच सकी। पुस्तक की कंपोजिंग, पेज मेकिंग और टाइप सेटिंग के लिए एरिश कंप्यूटर, रमना रोड, पटना के मो० जाहिद सैन, अखिलेश कुमार और मुदस्सर नजर बधाई के पात्र हैं।

पुस्तक आपके हाथों में है। इसे पढ़ने-पढ़ाने के प्रसंग में हुए अनुभवों से उपजे परामर्शों एवं सुझावों की हमें हमेशा प्रतीक्षा रहेगी।

हसन वारिस
निदेशक (प्रभारी)
राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

प्रस्तुत पुस्तक

यह पुस्तक – 'गोधूलि – 1' बिहार राज्य के नवम वर्ग के छात्रों के लिए हिंदी विषय की पाठ्यपुस्तक है । इसे शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस० सी० ई० आर० टी०) के तत्त्वावधान में विशेषज्ञों द्वारा निर्मित नवीन पाठ्यक्रम के आलोक में तैयार किया गया है । पुस्तक को अंतिम प्रकाश्य स्वरूप तक पहुँचाने की प्रक्रिया में अनेक विमर्शों से गुजरना पड़ा । इन विमर्शों में बिहार राज्य की संबद्ध कक्षा की पुरानी पाठ्यपुस्तक, प्रादेशिक परिवेश, सामयिक शैक्षणिक वास्तविकताएँ एवं आवश्यकताएँ तथा हिंदी भाषा-साहित्य के अतीत और वर्तमान का प्रासंगिक बोध निरंतर बनाये रखना पड़ा । हिंदी भाषा-साहित्य के निर्माण एवं विकास में हमेशा ही बिहार की उल्लेखनीय भूमिका रही है । हमने इस भूमिका की, पुस्तक की परिकल्पना और स्वरूपग्रहण में, बोध और स्मृति बनाये रखी है । निश्चय ही यह बोध एवं स्मृति परिग्रहमूलक न होकर चयनधर्मी है । हमारे चयन में वस्तुपरक निष्पक्षता, स्थायित्व तथा हिंदी भाषा-साहित्य की अंतरप्रादेशिक राष्ट्रीय प्रकृति के अनुरूप विशदता रहे; इतना ही नहीं, सामाजिक-सांस्कृतिक सद्भाव, जनतांत्रिकता और विवेकनिष्ठा के साथ-साथ अनेक प्रकार की संक्रामक संकीर्णताओं का सक्रिय निषेध भी दिखे – इसकी कोशिश की गई है ।

पुस्तक में काव्य एवं गद्य के दोनों खंडों में 12-12 रचनाएँ हैं । इनमें हिंदी की स्थानीय जड़ों, राष्ट्रीय व्याप्तियों, अंतरभाषिक संबंधों और अंतरराष्ट्रीय सरोकारों को एक संहति में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । गद्य खंड में सजग रूप से तीन हिन्दी कथासमयों के तीन प्रतिनिधि बिहारी कथाकारों की कहानियाँ रखी गई हैं । तीनों कहानियों में बिहार की माटी-पानी-हवा और चेतना की अभिव्यक्ति तो है ही, उसके साथ हिंदी की अपनी भारतीयता की विशिष्ट अभिव्यक्ति भी है ।

प्राचीन काल में विश्व के महानतम शिक्षण संस्थान 'नालंदा विश्वविद्यालय' की अवस्थिति बिहार में रही है । बिहार का अतीत गौरवशाली रहा है । यहाँ भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का नालंदा विश्वविद्यालय पर प्रसिद्ध परिचयात्मक आलेख छात्रों के लिए प्रस्तुत है । देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद एक सुप्रसिद्ध शिक्षाविद्, विचारक और लेखक भी थे । यह लेख उनके व्यक्तित्व के इन गुणों का स्मारक है । इसी तरह 'ग्राम-गीत का मर्म' डॉ० लक्ष्मीनारायण सुधांशु का बहुप्रशंसित निबंध है जिसे लोकसंस्कृति और लोकसाहित्य के महत्त्व का छात्रों को बोध कराने के लिए प्रस्तुत किया गया है । डॉ० सुधांशु बिहार के यशस्वी स्वाधीनता सेनानी, पत्रकार और साहित्यकार थे । आधुनिक हिंदी गद्य के अनेक रूपों की प्रामाणिक झलक पेश करने वाली अनेक रचनाओं के साथ यहाँ 'शिक्षा' विषय पर विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर का एक महत्त्वपूर्ण प्रासंगिक निबंध दिया गया है । आधुनिक युग में स्वदेशी शिक्षा के मौलिक परिकल्पकों में रवीन्द्रनाथ अग्रगण्य हैं । शिक्षाविषयक उनके अनेक निबंध हैं जिनमें से एक किंचित् सावधान संपादन के साथ यहाँ प्रस्तुत है ।

काव्यखंड का आरंभ हिंदी के यशस्वी संत कवि रैदास के पदों से होता है । संत रैदास हिंदी भक्ति काव्य के गौरव हैं । उनकी निरभिमान विनम्रता, समर्पण और सरलता हमारी बहुमूल्य संपदा है । महान प्रेमी कवि मंझन हिंदी सूफी काव्य के भास्वर शिखर हैं । प्रेम के संबंध में उनके उद्‌गार विशेष मननीय हैं । रीतिकाल के भक्त कवि गुरुगोविंद सिंह की रचना बिहार की गरिमामयी विरासत का अंग है । इन महान कवियों के अतिरिक्त आधुनिक हिंदी काव्य के अनेक महिमाशाली कवियों की रचनाएँ यहाँ हिंदी काव्य प्रवाह की विपुलता और गहनता का एक समृद्ध साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं । काव्यखंड का समापन एक हिंदीतर भारतीय कवि और एक अंतरराष्ट्रीय कवि की कविताओं से होता है । इससे हिंदी कविता के अड़ोस-पड़ोस और उस वैश्विक परिसर का परिचय होता है जिसके बीच वह अपनी स्वतंत्र पहचान बनाती है ।

पुस्तक का 'गोधूलि' नाम सांध्य परिवेश, कर्मठ श्रम के बाद घर लौटने के क्रीड़ामय उत्साह, प्रकृति के रंगवैभव, मनुष्य के मनुष्येतर नैसर्गिक सहभाव आदि अनेक भावों का स्मारक है । 'गोधूलि' शब्द सघन सांस्कृतिक बोध का सूचक तथा प्रासंगिक रूप से साभिप्राय और अर्थपूर्ण है ।

आशा है, यह पुस्तक नई पीढ़ी के भाषा-साहित्य के पाठकों और बिहार के शिक्षार्थियों को रुचिकर प्रतीत होगी । यह पाठ्यपुस्तक सहचर-मित्र की तरह उन्हें भाषा और साहित्य के अद्यतन वास्तव से परिचित कराए – इस कामना के साथ इसे हम शिक्षार्थियों को सौंपते हैं ।

समन्वयक, हिंदी भाषा समूह
हेमंत कुमार हिमांशु
सहायक संपादक, ज्ञान विज्ञान, पटना ।

अध्यक्ष, हिंदी भाषा समूह
भृगुनंदन त्रिपाठी
हिंदी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।